कामयाबी का सफ़र

भारतीय-अमेरिकी समुदाय

आलेख एवं फोटो: लिसेट बी. पूल

उत्तरी कैलिफोर्निया के यूबा सिटी कस्बे को कई लोग 'लिटिल इंडिया' भी कहते हैं। जल्दी ही यहां तीसरे गुरूद्वारे के द्वार श्रद्धालुओं के लिए खुल जाएंगे। सिलिकॉन वैली के प्रवेशद्वार फ्रीमोंट की एक इमारत में तने नेटों के ऊपर शटलकॉक सनसना रही हैं, उन पर आंखें गड़ाए इधर से उधर दौड़ते खिलाड़ियों के जूतों की चरमराहट एक करारा संगीत रच रही है। उधर दुनिया के दूसरे छोर पर मौजूद अमेरिकी विमानवाहक युद्धपोत पर नौसेना के उड़ाके योग का अभ्यास कर रहे हैं।

तंदूरी व्यजनों की रसीली सनसनाहट और भांगडे के ढोल की उत्तेजक ताल से लेकर अस्पतालों, प्रौद्योगिकी निगमों और डिजिटल मीडिया स्टूडियो तक भारतीय अमेरिकियों की उपस्थिति उत्तरी कैलिफोर्निया वासियों के दैनिक जीवन का एक जीवंत और रंगीन हिस्सा बन चुकी है।

समाजशास्त्री इस स्वीकृति का श्रेय यहां प्रतिष्ठित हो चुके भारतीय अमेरिकी समुदाय के बढ़ते प्रभाव, 20 के पार की उनकी संतानों और डॉटकॉम उद्योग की ओर खिंचे चले आते उद्यमी युवा जोड़ों को देते हैं। वैसे इस समुदाय में व्याप्त संपन्नता के भड़कीले दिखावे, उपलब्धियों पर हद से ज़्यादा ज़ोर और दोनों देशों के संबंधों को लेकर अस्पष्ट भाव के आलोचक भी कम नहीं हैं। एक ओर अमेरिकी रोज़गार के आउटसॉर्सिंग ठेकों के माध्यम से भारत पहुंचने को लेकर नामालूम सी कड़वाहट है तो दूसरी ओर आप्रवासी भारतीय समुदाय को लेकर प्रशंसा का भाव, और उसकी परंपरा और संस्कृति को निकट से जानने की इच्छा भी जोर मारती है। उत्तरी अमेरिका में करीब 200,000 भारतीय-अमेरिकी हैं।

भारतीय-अमेरिकियों सहित कैलिफोर्निया के कई अल्पसंख्यक समुदाय चाहते हैं कि उन्हें केवल एक अजूबे की तरह स्वीकार न किया जाए बल्कि समग्रता में समझा जाए। 36,758 जनसंख्या वाली यूबा सिटी में ही भारतीय अमेरिकी कुल संख्या का 7 प्रतिशत यानी मेक्सिकी मूल के लोगों के बाद दूसरा सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है।

पाकिस्तान-अफगानिस्तान-मध्यपूर्व के प्रवासी मुख्य धारा के सदस्यों को अपने समुदायों और अराधना केंन्द्रों में निमंत्रित करके भारतीय अमेरिकी, समझदारी बढ़ाने के प्रयास करते रहते हैं। इस क्रम में बैडमिंटन और योग की लोकप्रियता इस दिशा में प्रगति की गवाह है। पिछले एक साल में सैन फ्रांसिस्को बे एरिया में तीन बैडमिंटन केंन्द्र शुरू हुए हैं। कुछ हाई स्कूलों में भी इस खेल को जगह मिली है। मार्च 2005 में यूनाइटेड बैडमिंटन क्लब ऑफ फ्रीमोंट खुलने के कुछ ही समय बाद मिलपिटास में स्मैश सिटी और मेन्लो पार्क में गोल्डन गेट बैडमिंटन क्लब खुले। प्रोग्राम डायरेक्टर एबि बॉटिस्टा बताते हैं कि ये तीनों बैडमिंटन क्लब 16 किलोमीटर के दायरे में स्थित हैं।

1974 में कैलिफोर्निया में आ बसे अरशद सैयद कहते हैं, ''कुछ महीने पहले जब अपने मित्रों से मुझे इस जगह के बारे में पता चला तो मैं उत्साह से भर उठा। तीस साल तक मैं बैडमिंटन न खेल पाया क्योंकि न तो खेलने के लिए कोई साथी था, न कोई ठीक सी जगह।'' 50 पार के अरशद ने कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, सॉनॉमा से एम.बी.ए. किया। वह चुस्त-दुरूस्त बने रहने और ''इस हुनर का मज़ा उठाने के लिए'' बैडमिंटन खेलते हैं। उन्हें लगता है कि क्षेत्र में बढ़ती भारतीयों, पाकिस्तानियों, अफगानियों और हांगकांग के चीनियों की संख्या के कारण इस खेल की लोकप्रियता बढ़ रही है। उधर योग की लोकप्रियता का आलम यह है कि इसके वीडियो टेप किराने की दुकानों

अरशद सैयद फिर से बैडमिंटन खेलने की जगह पाकर बेहद उत्साहित हैं।

में बिकते हैं और पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सर्विस जैसे टेलिविज़न चैनल घर पर ही रहने वाले बहुत बूढ़े लोगों के लिए पेशियों का लचीलापन बनाए रखने के व्यायाम सिखाने वाले ''सिट एंड बी फ़िट'' कार्यक्रम प्रसारित करते हैं।

अगस्त की शुरूआत में लॉस एंजेलेस टाइम्स, एबीसी टेलिविज़न नेटवर्क और अन्य माध्यमों ने दमखम, शारीरिक लचीलापन और एकाग्रचित्तता बढ़ाने को उत्सुक सैनिकों और नाविकों के योगाभ्यास के बारे में बताया। सशस्त्र सेनाओं में भी स्वास्थ्य लाभ कर रहे घायलों और स्वस्थ सैनिकों के बीच योगाभ्यास की लोकप्रियता बढ़ रही है। योग की बढ़ती लोकप्रियता को प्रचारित करने वाले लेखों की शुरूआत हुई 100,000 प्रसार संख्या वाली योग संबंधी अमेरिका की दूसरी सबसे बड़ी पत्रिका 'फ़िट योगा' में छपी अमेरिकी विमानवाहक पोत पर युद्ध की पोशाक में लैस दो नौसैनिकों उड़ाकों के वीरासन मुद्रा के अभ्यास की तस्वीरों से। पत्रिका की मुख्य संपादक रीटा ट्रीगर ने लिखा, ''युद्ध एक त्रासदी है....'' उन्होंने खुशी जाहिर की कि योग शांति पाने में सैनिकों की सहायता कर रहा है। उन्होंने बताया कि पत्रिका में छपे चित्र उन्हें नौसैनिक उड़ाके लेफ़्टिनेंट जेसन पेन ने ई-मेल से भेजे थे।

बैडमिंटन और योग के कारण बढ़ा व्यवसाय भारतीय अमेरिकियों की देन है। मई 2006 में जारी एक जनगणना रपट के अनुसार 2002 में उनकी कंपनियों ने राष्ट्रव्यापी स्तर पर 326 अरब डॉलर से अधिक का राजस्व पैदा किया और 1997 से 2002 के बीच इस समूह के स्वामित्व वाली कम्पनियों का प्रतिशत बढ़कर 24 तक पहुंच गया।

दूसरी ओर भारतीय अमेरिकी और अन्य दक्षिण एशियाई युवा अपनी जातीय परंपराओं से प्रेरणा लेकर सामुदायिक और विश्वविद्यालय/कॉलेज परिसर के संगठनों में अपनी पारंपरिक प्रदर्शन

संपादक की टिप्पणी: सैन फ्रांसिस्को बे एरिया में भारतीय अमेरिकी समुदाय के बारे में प्रकाशित लेख शृंखला का यह दूसरा और आखिरी भाग है।

ऊपर: डॉ. बीना इरैस्मस (बैठी हुई) और उनकी बेटी शिफाली फ्रीमोंट में अपने घर में। डॉ. इरैस्मस कहती हैं कि जब युवा पीढ़ी यह वास्तविकता समझेगी कि अमेरिकी पहचान के साथ ही भारतीय विरासत भी महत्वपूर्ण है तो पहचान का संकट समाप्त हो जाएगा।

नीचे: शेबॅट कॉलेज, हेवार्ड में समाज विज्ञान की सहयोगी प्रोफ़ेसर अमीना सईद।

कलाओं से रूबरू करा रहे हैं। बे एरिया के कुछ बेहद लोकप्रिय क्लबों में दक्षिण एशियाई युवाओं के लिए भांगड़ा पार्टियां आयोजित होती हैं जिनमें हिंदी फ़िल्मी गीतों सहित सभी लोकप्रिय संगीत शैलियों पर युवा थिरकते हैं।

देह से चिपकी, गहरे गले की पोशाकों के साथ नाक में नथनी पहने, दुपट्टे गले में डाले युवतियां और शानदार सूट पहने नौजवानों का पार्टियों में डांस फ़्लोर पर थिरकना आम बात है।

हेवर्ड, कैलिफोर्निया के शेबॅट कॉलेज में समाज विज्ञान की सहयोगी प्रोफ़ेसर अमीना सईद कहती हैं, ''दूसरी पीढ़ी के भारतीय-अमेरिकी युवाओं का संसार पश्चिमीकरण की जिस प्रक्रिया से गुजर रहा है, उसमें 5000 साल पुरानी संस्कृति और भाषा की जकड़ हल्की हो रही है। संस्कृतियों के संश्लेषण के इस दौर में उन्हें एक ऐसे समाज में लिंगाधारित भूमिकाओं के विरोधाभासों को प्रतिबंधित करते हुए ''आदर्श अल्पसंख्यक'' समुदाय की अपनी स्थिति को बरकरार रखना है जो बस अभी-अभी ही इस तथ्य को समझ पा रहा है कि सभी को काले या सफ़ेद के खांचों में नहीं डाला जा सकता।''

अमीना बात आगे बढ़ाती हैं, ''दूसरी पीढ़ी के कई युवा अपने माता-पिता की संपन्नता से झेंपते हैं। मेरी एक मित्र अपनी नई जगुआर में अपने बेटे को कॉलेज से घर लाने गई तो उसने कई दिन मां से बात तक नहीं की क्योंकि उसे कॉलेज के अपने साथियों के सामने वैभव का यह प्रदर्शन बुरा लगा था। भारतीय अमेरिकी जहां मुख्यधारा तंत्र का अंग बनने को आतुर एक अल्पसंख्यक वर्ग है, वहीं वह कसकर बंधी ऐसी मुट्ठी भी हैं जिसमें से एक कण भी अंदर-बाहर नहीं हो सकता। वित्तीय लेनदेन और सहायता में वह एक-दूसरे का सहारा लेते हैं। होटल व्यवसाय में उनकी भारी पूंजी लगी है, हीरे के व्यवसाय में भी कदम बढ़ रहे हैं।'' वह ध्यान दिलाती हैं कि दूसरी पीढ़ी के ज़्यादातर लोगों में अपने माता-पिता जैसी महत्वाकांक्षा और खुद को झोंकने की प्रवृत्ति नहीं है।

स्त्री रोग विशेषज्ञ बीना इरैस्मस और न्यूरोसर्जन डेस्मंड इरैस्मस की बेटी शिफाली इरैस्मस जोस स्टेट यूनिवर्सिटी में प्रसारण और जनसंपर्क की पढ़ाई कर रही है। उसकी बड़ी बहन सपना डॉक्टर है, उसके माता-पिता अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए 1967 में अमेरिका आए थे और फ्रीमोंट में बस गए। शिफाली कहती हैं, ''दो संस्कृतियों में एक साथ जीना कठिन काम है। ''

बीते दिनों पर निगाह डालती हुई डॉ. बीना इरैस्मस कहती हैं, ''जैसे-जैसे भारतीय समुदाय मजबूती से पांव जमा लेगा, वैसे-वैसे उस की नई पीढ़ी पहचान की दुविधा से छुटकारा पाकर अपनी भारतीय विरासत और अमेरिकी पहचान के समान महत्व को पहचानने लगेगी। तब उनमें संतुलन और आतंरिक शांति की भावना आएगी।''

कुछ भारतीय अमेरिकी स्वयंसेवी संगठनों, अस्पतालों, पुस्तकालयों, स्कूलों और बूढ़े लोगों के आवासों में समय और श्रम लगाकर आंतरिक विरोधाभास से पार पाते हैं। डॉ. स्टीवन फोंग के क्लीनिक में पंजीकृत डेंटल सहायक शीला लाड बिलिमोरिया, गुजरात में जन्मी हैं। वह समुदाय सेवा को संतोष देने वाला और उदात्त अनुभव पाती हैं। वह कहती हैं, ''इससे मन शान्त-प्रसन्न रहता है। भारतीय संस्कृति में लौटाने की परंपरा अंतर्निहित है। दूसरों की ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए आप आत्मकेंद्रित नहीं रह जाते।'' शीला दंत विशेषज्ञ के साथ काम करने वाली बहुत सी भारतीय-अमेरिकी स्त्रियों में से एक हैं। अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन अल्पसंख्यक समुदायों को दंत चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़ने के लिए कह रही है।

डॉ. स्टीवन सी. फोंग और शीला लाड डॉ. फोंग के क्लीनिक में। गुजरात में जन्मी लाड भारतीय अमेरिकी महिलाओं की उस बढ़ती तादाद में शामिल हैं जो दंत चिकित्सा के क्षेत्र में आ रही हैं।

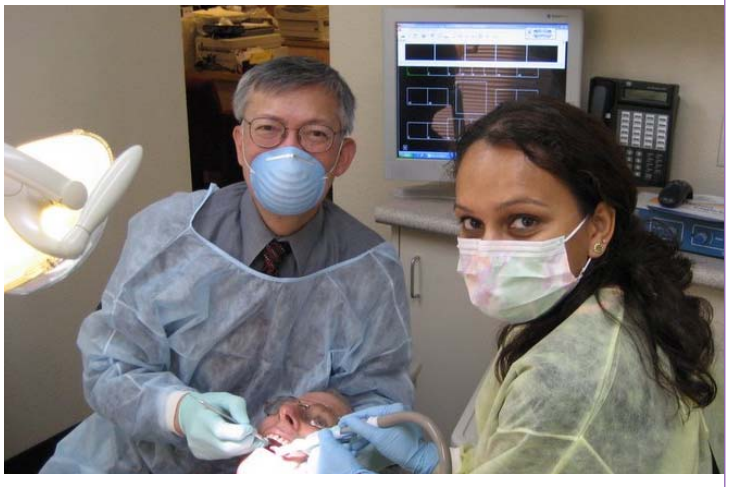

अमेरिका में भारतीय-अमेरिकी समुदाय का संचार का नेटवर्क विस्तृत हुआ है। पिछले दो सालों में टेलिविजन पर पांच नए सप्ताहांत शो आए हैं, साप्ताहिक पत्रिका 'निर्वाण वुमेन' का प्रकाशन हुआ है। इनके माध्यम से भारतीय-अमेरिकी भारत से आई खबरों से तो जुड़े ही रहते हैं, अमेरिका में रह रहे अन्य भारतीय समुदायों की जानकारी भी बनाए रखते हैं।

लिसेट बी. पूल स्वतंत्र पत्रकार हैं और ईस्ट बे स्थित कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी में पढ़ाती भी हैं।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।

आप्रवासी कर रहे हैं अपने मूल देशों की अर्थव्यवस्था में मदद

एलिजाबेथ केलेहर

इसमें दो राय नहीं कि अमेरिका में रह रहे आप्रवासियों द्वारा अपने घर भेजी जाने वाली धनराशि से विकासशील देशों में गरीबी कम होती है और यह एक तरह से इन देशों को मिलने वाली विदेशी सहायता की पूरक भी होती है। इस बात की पुष्टि कई रपटें करती हैं।

अमेरिका में रह रहे आप्रवासियों द्वारा जिन देशों में सबसे अधिक धन भेजा जाता है उनमें भारत, मेक्सिको, फिलीपीन, ग्वाटेमाला और अल सल्वाडोर शामिल हैं। चीन, वियतनाम, कोलंबिया और ब्राजील को भी बड़ी मात्रा में धन भेजा जाता है।

सुमित्रा चौधरी वॉशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास में आर्थिक विश्लेषक हैं। उनका कहना है, ''वर्ष 2005 में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रह रहे भारतीय नागरिकों ने 32 अरब डॉलर की राशि भारत भेजी। इसमें अमेरिका से कितना पैसा भेजा गया, इसका आंकड़ा तो नहीं मिल पाया, लेकिन विदेश में रह रहे भारतीयों में सबसे ज़्यादा अमेरिका में रहते हैं।''

एक अनुमान के मुताबिक, अमेरिका में विदेश में पैदा हुए करीब तीन करोड़ 40 लाख लोग रहते हैं। यह संख्या अमेरिका की आबादी की 12 फीसदी है, जो कि 1920 के दशक के बाद से सबसे ज़्यादा है। शोध समूह 'इंटर अमेरिकन डायलॉग' के मैनुएल ऑरोज्को के अनुसार, इसमें से करीब 70 प्रतिशत लोग अपने घर पैसा भेजते हैं।

ये आप्रवासी कितना पैसा अपने घर भेजते हैं, इस बारे में आंकड़े भले ही भिन्न हों, मगर आर्थिक विश्लेषण ब्यूरो का मानना है कि वर्ष 2004 में अमेरिका से कम से कम 30 अरब डॉलर बाहर के देशों में भेजे गए। यह राशि अमेरिका द्वारा उस साल दी गई विदेशी सहायता से करीब डेढ़ गुना ज़्यादा थी।

हडसन संस्थान का कहना है कि आप्रवासियों द्वारा हर साल 47 अरब डॉलर की राशि अपने घर भेजी जाती है। उसका कहना है कि यह राशि इसलिए ज़्यादा नजर आती है, क्योंकि इसमें बैंकों द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि के अलावा किसी परिचित के हाथों अपने परिजनों को भेजी जाने वाली राशि भी शामिल है। 'इंटर अमेरिकन डायलॉग' इस राशि को 60 अरब डॉलर आंकता है। खैर, एकदम सटीक आंकड़ा जो भी हो, विशेषज्ञ इस बात पर एकमत हैं कि पिछले कुछ सालों के दौरान आप्रवासियों द्वारा अपने देश भेजी जाने वाली राशि में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है। आर्थिक विश्लेषण ब्यूरो का आकलन है कि 1994 से 2004 के बीच अमेरिका से दूसरे देशों को भेजी जाने वाली राशि में दोगुनी से ज़्यादा वृद्धि हुई है।

व्यक्तिगत अनुभव

आप्रवासियों द्वारा अपने देशों को दो तरह से धन भेजा जाता है। एक तो वे लोग हैं जो अपने परिवार की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पैसा भेजते हैं और दूसरे वे हैं जो अपने गांव या शहर में बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था करने के लिए सामूहिक रूप से धन भेजते हैं।

कामकाजी लोगों का ज़्यादातर पैसा उनके घरों को जाता है। अभी कुछ ही समय पहले वर्जीनिया के फाल्स चर्च इलाके के कल्मोर शॉपिंग सेंटर में हमें इसका एक सबूत भी मिला। आसपास के इलाकों में रहने वाले कई आप्रवासी श्रमिक ट्रकों से उतरे और उनमें से बहुत से सीधे एक ऐसी ट्रैवल एजेंसी के दफ़्तर में चले गए, जो दूसरे देशों में पैसा पहुंचाने का काम करती है। जोस 28 साल का एक सड़क मजदूर है। वह बताता है कि ग्वाटेमाला में उसके छह भाई रहते हैं और जब भी वे कहते हैं, वह उन्हें सौ से दो सौ डॉलर तक भेज देता है। वह कहता है कि बरसात के दिनों में उसे दिक्कत हो जाती है, क्योंकि उन दिनों काम नहीं मिल पाता और वह अपने भाइयों को ज़्यादा पैसा नहीं भेज पाता।

कार्लोस 33 साल का है। वह पिछले 15 साल से अमेरिका में रह रहा है। उसे एक ऑटो बॉडी शॉप में पक्की नौकरी मिली हुई है। वह होंडुरस में रह रही उसकी दादी, बहन और भतीजी की मदद के लिए हर हफ़्ते दो सौ डॉलर भेजता है।

अमेरिका में रह रहे कुछ आप्रवासियों ने अपने गांवों, कस्बों में बड़ी परियोजनाएं चलाने के लिए 'गृह नगर संगठन' बना रखे हैं। इस मकसद को पूरा करने के लिए वे समय-समय पर पार्टियों का आयोजन करते रहते हैं और इनमें आने वाले मेहमान एम्बुलेंस खरीदने या स्कूल की बिल्डिंग बनाने आदि के लिए दान देते हैं।

हेक्टर मोरेल्स और उनकी मां अल्फ़ोंसा लॉस एंजेलेस में पॉपुलर कैश एक्सप्रेस काउंटर पर एटेलडिना रोमेरो को मेक्सिको भेजने के लिए नकदी देते हुए।

© ग्रेग स्मिथ/एपी

कैलिफोर्निया में 1980 के दशक की शुरुआत में मेक्सिको के जैकाटेका क्षेत्र के आप्रवासियों के पांच संगठनों ने एक महासंघ का गठन किया। वर्ष 2000 तक ये लोग अपने घर हर साल 10 लाख डॉलर की राशि भेज रहे थे। इन्होंने अपने काम से मेक्सिको की संघीय, राज्य और नगर सरकार को भी उनके गृहनगर में इतनी ही धनराशि खर्च करने के लिए सहमत कर लिया। फेडरेशन के उपाध्यक्ष एफ्रेन जिमेनेज कहते हैं कि यदि आप जैकाटेका जाएं तो पाएंगे कि वहां गरीबों का पूरी तरह कायापलट हो चुका है। आपको वहां बढ़िया अस्पताल, क्लीनिक, सड़कें और पानी के कुएं मिलेंगे।

बैंकों से स्पर्धा

जेफ्री पासेल 'प्यू हिस्पानिक सेंटर' में जनसंख्याविद हैं। वह कहते हैं कि आप्रवासियों द्वारा अपने मुल्कों को भेजी जा रही धनराशि में इस बीच काफ़ी वृद्धि हुई है। इस बारे में इसलिए भी पता चल रहा है, क्योंकि ज़्यादातर मामलों में पैसा बैंकों के माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक तरीके से भेजा जा रहा है। पिछले एक दशक के दौरान आप्रवासियों द्वारा अपने देश में पैसा भेजने की रफ़्तार में काफ़ी वृद्धि हुई है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़ों से पता चलता है कि मध्य-पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में इनके सकल घरेलू उत्पाद के चार फ़ीसदी के बराबर पैसा विदेशों से आ रहा है।

अमेरिका का केंद्रीय बैंक (फ़ेडरल रिजर्व), देश के बैंकों को इस बात की इजाज़त दे रहा है कि वे मेक्सिको को पैसा ट्रांसफर करने के लिए एक स्वचालित क्लियरिंग हाउस का इस्तेमाल करें। इसको लोकप्रिय बनाने के लिए वह बैंकों को प्रचार सामग्री भी मुहैया करा रहा है। इस कार्यक्रम को उसने 'डाइरेक्टो ए मेक्सिको' नाम दिया है।

फेडरल रिजर्व का कहना है कि अमेरिका के 11 फ़ीसदी परिवारों का चेकिंग (करंट) अकाउंट नहीं है। मिशेल बैंक विस्कॉन्सिन के मिलवॉकी क्षेत्र का एक छोटा सा बैंक है। इसके अध्यक्ष जेम्स मैलोने बताते हैं कि ऐसे आप्रवासी, जो नकद लेन-देन में ज़्यादा यकीन करते हैं, अब पैसा ट्रांसफर करने के लिए धीरे-धीरे बैंकों के दरवाजे पर पहुंच रहे हैं। उनको उम्मीद है कि जल्द ही ये लोग वित्तीय मुख्यधारा में शामिल हो जाएंगे।

***एलिजाबेथ केलेहर** यूएसइनफो की कार्यालय लेखिका हैं।*